IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 7, April 2023

"डॉ. सुनीता जैन द्वारा रचित 'बोज्यू' उपन्यास की पात्र योजना"

डॉ. मीनाक्षी शर्मा
मकान नं. 58, लालबाग (नेमी नगर), झालारापाटन, जिला–झलवार, राजस्थान
मोबा. नं. 7737571921

शोध–सारांशः

डॉ. सुनीता जैन द्वारा रचित लघु उपन्यास 'बोज्यू' लघु उपन्यासों के सभी तत्त्वों का अनुसरण करता है। उघु उपन्यास में पात्र और चरित्र–योजना का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। लघु उपन्यासों में बृहत् उपन्यासों की तरह पात्रों की भरमार नहीं होती। लघु उपन्यास में दो या तीन पात्रों के मध्य ही सम्पूर्ण कथानक घटित हो जाता है। बोज्यू की पात्र योजना को तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया है। इन्हीं बिन्दुओं को शोध पत्र में प्रस्तुत करने का एक सार्थक प्रयास है।

मुख्य शब्दः सुनीता, जैन, रचित, 'बोज्यू', उपन्यास, पात्र, योजना, कथावस्तु आदि।

प्रस्तावनाः

जब भी कोई उपन्यासकार अपने उपन्यास की कथावस्तु का निर्धारण करता है तो वह उस कथानक के आधार पर कुछ पात्रों का नियमन भी करता है। लघु उपन्यास में वृहत उपन्यास की तरह अधिक पात्र नहीं होते हैं। उसमें तीन या चार पात्रों के माध्यम से ही सम्पूर्ण कथाक्रम घटित होता है, कुछ पात्र अत्यधिक महत्वपूर्ण होते हैं, कुछ पात्र कम महत्वपूर्ण होते हैं तथा कुछ पात्र ऐसे भी होते है जिनका उल्लेख मात्र किया जाता है। प्रमुख पात्र ही महत्वपूर्ण होते हैं एवं उपन्यास में उन्हीं की चर्चा होती है। 'बोज्यू' उपन्यास के पात्रों का श्रेणी विभाज तीन स्तर पर किया गया है–

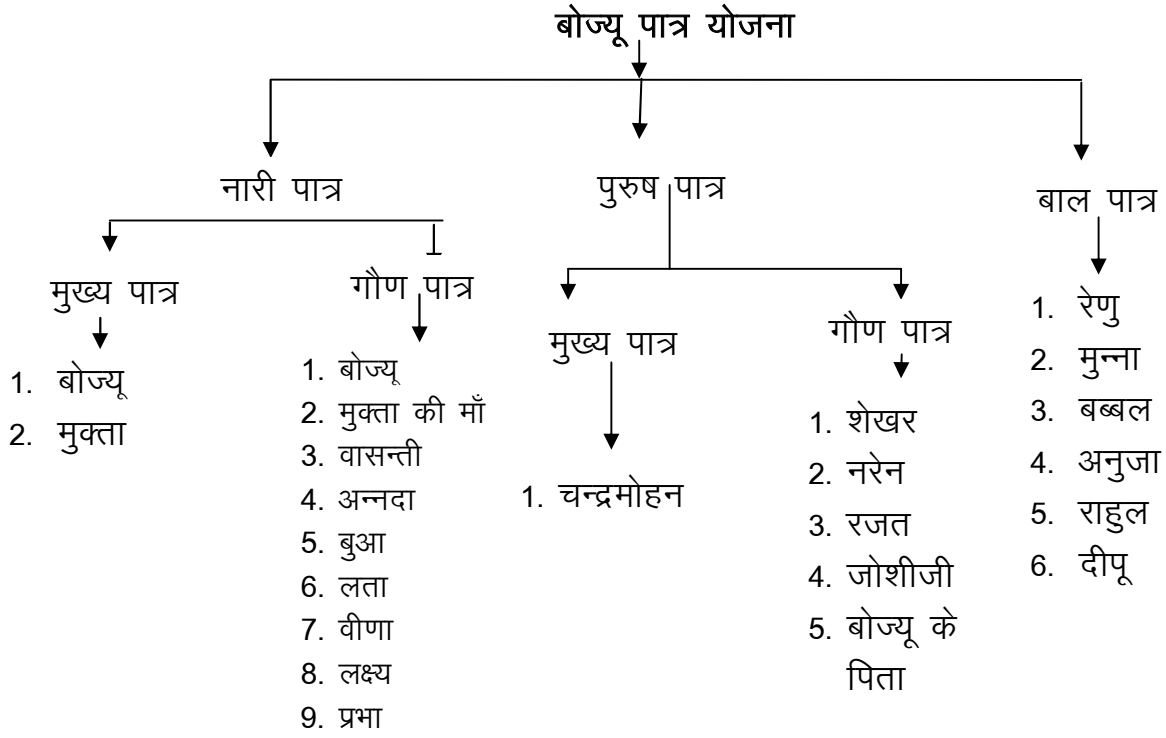

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 7, April 2023

बोज्यू का चरित्र चित्रण :

शीर्षक के अनुसार उपन्यास की नायिका बोज्यू है। बोज्यू का अर्थ पहाड़ी क्षेत्र में भाभी होता है। बोज्यू उपन्यास पढ़ने के उपरान्त बोज्यू के चरित्र की विशेषताओं को निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से प्रकट किया जा सकता है–

1. संस्कारित पारिवारिक व्यक्तित्व
2. कुशल गृहिणी
3. लचीला व्यतिव
4. दूरदर्शी विचारधारा वाली नारी

1. संस्कारित पारिवारिक व्यक्तित्वः

बोज्यू एक सुसंस्कृत परिवार से सम्बन्ध रखती है। उसका रहन–सहन भले ही सादा हो पर घर में कृश्ण–भक्ति व परिवार की सेवा में ही अपना जीवन व्यतीत करती आई है। वह धार्मिक भी बहुत है। एक उदाहरण दृष्टव्य है–

''बोज्यू आँखे मूँदे अपने कृष्ण भगवान की मूर्ति के आगे बैठी है, आँसूओं की धारा बह रही है, पर निःशब्द।''[1]

जब मुक्ता की विदाई होती है और वह बोज्यू के पास जाती है। बोज्यू के पास किसी और का आश्रय नहीं है, वह केवल कृष्ण को ही अपने जीवन का आधार मानती है। प्रस्तुत अंश बोज्यू के धार्मिक व संस्कारित होने का बोध कराता है।

2. कुशल गृहिणीः

कुशल गृहिणी के रूप में बोज्यू का स्वरूप और भी अधिक उभरकर सामने आता है। जब मुक्ता बोज्यू के घर अपनी भाभी लता के साथ जाती है तब घर देखती है तो उसके संतोषी प्रकृति के होने का पता चलता है। साथ ही वासन्ती के विवाह पर वह अपने लिए खरीदारी न कर बच्चों की खुशी का ध्यान रखकर अपनी भावनाओं की दबाते हुए कुशल गृहिणी होने का परिचय देती है। अपना स्थान उपन्यास में कुशल गृहिणी के रूप में निर्धारित करती है।

अपने बच्चों की खुशियों की खातिर वह अपनी भावनाओं को दबाते हुए मुक्ता के सवाल का देते हुए कहती है–

''अच्छी–बुरी जैसी भी, पहन लूँगी मुक्ता। मुझे किसी को दिखाना थोडे ही है। कैसे क्या पहना है, इन्होंने ती जाना ही नहीं। फिर पैसा बर्बाद करने से क्या लाभ ? राहुल, अनुजा अच्छे–अच्छे चस्त्र पहनें मुझे प्रसन्नता होती है।''[2]

नारी अपने बच्चों की खुशियों के लिए परिवार, पति आदि के लिए अपने–आपको पूर्ण रूप से समर्पित कर देती है इसीलिए शायद नारी को त्याग, प्रेम और करूणा की प्रतिमूर्ति कहा जाता है।

3. लचीला व्यक्तित्व :

बोज्यू का शिक्षित होकर भी एक सामान्य गृहिणी जैसे जीवन यापन करना उसके लचीले व्यक्तित्व को स्पष्ट करता है। हर परिस्थिति में वह ढ़लकर अपने अस्तित्व को प्रखरता के साथ स्थापित करती उपन्यास में नजर आती है। उदारणस्वरूप निम्नलिखित पंक्तियाँ देखें'–

''एकदम साधारण पहनावा पर उच्च विचार। बातों के दौरान पता लगा कि बोज्यू ने बनारस से विवाहोपरान्त बी.ए. पास किया था। एम.ए. अनुजा के आगमन से बीच में ही रह गया। वैसे इन उपाधियों के प्रति बोज्यू का अधिक मोह नहीं है लेकिन मुक्ता के लिए यह नई विचारधारा थी।''[3]

4. दूरदर्शी विचारधारा वाली नारी :

बोज्यू के चरित्र को उभारता यह बिन्दू उसे उपन्यास की नायिका के पद अनुरूप उपस्थित करता है। यही वह तत्त्व है जो सम्पूर्ण कथानक को मोड़ देता है और बोज्यू की दूरदर्शिता वाली पैनी नजर (सोच) को प्रकट करता है। मुक्ता बोज्यू के पास जाती है तब बोज्यू कहती है–

''जब छोटा था, बहुत बीमार रहता था। ईजा सर्दियों मे सारी–सारी रात इसके सिरहाने बैठकर निकाल देती थी। किसी के कहने से भी नहीं उठती। कहती बुढ़ापे में इसकी बहू मेरी भी तो ऐसी ही सेवा करेगी। और उन्हें पता चला कि चाची कैसा व्यवहार करती हैं तो कई–कई दिन खाना नहीं खाया, बस रोती रहती थी। पिताजी कितना समझाते है कि बढ़ा आदमी बनेगा तेरा बेटा। तुझे ही सुखी रखेगा। सोचती हूँ सुन लेगी तो बात नहीं छोड़ेगी। और वह नालायक कहकर गया है कि पिताजी से बात करूँगा।''[4]

बोज्यू के सम्पूर्ण कथन में दूरदर्शिता नजर आती है। वह यही चाहती है कि चन्द्रमोहन मुक्ता से कभी न मिले। उनके प्रेम का केवल एक ही परिणाम है और वह है–'दुःख'। वह अपने परिवार को लेकर चिन्ता प्रकट करती है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 7, April 2023

उपन्यास में नायिका के रूप में 'मुक्ता' को स्वीकार किया गया है। इसी के माध्यम से कथानक व प्रेम–कथा का विस्तार और परिणिति में दुःखान्तता का समन्वय लेखिका ने इसी पात्रों के माध्यम से किया है। अतः मुक्ता की चारित्रिक विशेषताओं को हम निम्नलिखित अध्ययन संकेतों में व्यक्त करेंगे–

क. मुक्ताः उपन्यास की नायिका की भूमिका में
ख. आकर्षक व्यक्तिव
ग. प्रभावशाली राजनैतिक रूप
घ. त्याग की प्रतिमूर्ति
ड़. सभ्य सुसंस्कृत पारिवारिक परिवेश में पोषित युवा
च. मानसिक अन्तर्द्वन्द्व को सहन करती नारी

मुक्ता में वे सभी गुण हैं जो कथा–नायिका में होने चाहिए। वह विचारशील, शिक्षित, जिज्ञासु, हमेंशा प्रथम आने वाली, मनोविश्लेषणवान आदि समस्त गुणों से युक्त है।

क. उपन्यास की नायिका की भूमिका में 'मुक्ता'

जब कोई प्रेम में होता है तब वह भावनात्मक रूप से कहीं–न–कहीं, किसी–न–किसी काव्य, मीत या चित्र आदि में खो जाता है। कहीं पर खो जाना ही प्रेम की पराकाष्ठा होती है। प्रस्तुत अंश मुक्ता की प्रेम–भावना को प्रकट करता है। ज बवह चन्द्रमोहन से प्रेम करती है और उर्दु शायरी के भावों में खो जाती है तथा अपनी सखी वीणा को देखकर कहती है–

"देख कैसी सुन्दर पंक्तियाँ है।
तुमको भुलाने के लिए
खुद को भुलाता जा रहा हूँ।
अश्क तुमको छू न ले
दरिया बहाता जा रहा हूँ।"[5]

यह अंश मुक्ता के प्रेम में होने और अपनी भावनाओं को इस पंक्ति में ढूँढ़ने का प्रयास करती है। अतः प्रेम और विरह इस उपन्यास में मुक्ता के माध्यम से प्रकट होती है। अतः नायिका के रूप में मुक्ता ही उपन्यास का आधार तत्त्व है। वही नायिका के स्वरूप में उपन्यास में अस्तित्व को बनाए रखती है।

ख. आकर्षक व्यक्तित्व :

मुक्ता उपन्यास में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। हर उपन्यास में नायिका स्वरूप उसके व्यक्तित्व का निर्धारण करता है। लेखिका ने अपने उपन्यास में मुक्ता के स्वरूप को इस प्रकार स्पष्ट किया है–

''नहा–धोकर मुक्ता शीशे के सामने गीले बाल सँवारने बैठी। शीशा देखने का मुक्ता को विशेष शौक है। बालों में कंधी वह बड़े दुलार से करती है।''

मुक्ता सामान्य सुन्दर है पर फिर उसका साँवला रंग अपनी अलग ही कशिश के साथ पाठकों को अपनी ओर आकृष्ट करता है। सुन्दरता की परिभाषा और वर्ण नहीं अपितु आकर्षक व्यक्तित्व होना होता है।

ग. प्रभावशाली राजनैतिक रूप :

जब मुक्ता का नाम उसकी सहेलियों के द्वारा कॉलेज यूनियन चुनाव में दिया जाता है और वह चुनाव जीत जाती है, वह अपने सभी दायित्वों को पूरी तरह निभाती है। अतः मुक्ता का एक नवीन रूप इस उपन्यास में उभरकर आता है–

'' मुक्ता कॉलेज यूनियन का चुनाव जीत गई। उसने अनुमान भी नहीं लगाया कि वह अपने कॉलेज में इतनी लोकप्रिय है। साथ ही उसका काम इतना बढ़ जाएगा, यह भी उसने न सोचा था। काम और काम के साथ पढ़ाई। पलक मारने की भी फुरसत नहीं उसे। क्लास समाप्त होते ही यूनियन रूम का चक्कर लगाती। नए आए नोटिस देखती। सभा–समाज के नियोजन का कार्यक्रम निश्चित करती। पूछताछ के उत्तर देती किन्तु काम से घबराती नहीं।''[6]

घ. त्याग की प्रतिमूर्ति :

जब मुक्ता प्रेम–विवाह को स्वीकार न करके अपनी माँ–भाई द्वारा लाए गए रिश्ते को स्वीकारती है और विदा के समय जब बोज्यू के पास जाती है तब केवल शब्दों से वार्तालाप नहीं होता है, उसमें छिपे बोज्यू के भाव और मुक्ता के त्याग की भावना प्रकट होती है–

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 7, April 2023

''सबके देखते अपनी विदा की साड़ी में लिपटी मुक्ता बोज्यू के कमरे में जा पहुँची। मुक्ता बिना हिचकिचाहट आगे बढ़ गई। पैर छूकर बोली, 'जा रही हूँ बोज्यू। बोज्यू उठ खड़ी हुई। हाथ पकड़कर मुक्ता को उठाया। मुक्ता शान्त है जैसे तुफान गुजर गया हो।''[7]

यह खामोशी मुक्ता के त्याग का प्रतीक है। बोज्यू की पूर्ण खामोशी के कारण मुक्ता अपना सम्बन्ध चन्द्रमोहन से तोड़कर विवाह के लिए तैयार हो जाती है। मुक्ता का त्याग एक प्रेमिका का त्याग नहीं अपितु स्व–अस्तित्व को खो देना है। चन्द्रमोहन खुश रहे इसके लिए अपनी प्रेम–भावनाओं को दबाकर वह अपने परिवार द्वारा लाए गए रिश्ते को स्वीकार कर लेती है।

ड़. सभ्य एवं सुसंस्कृत पारिवारिक परिवेश में पोषित युवा :

मुक्ता का पारिवारिक परिवेश एक सामान्य मध्यमवर्गीय परिवार का है। उसके नरेन भैया एक उच्च पद पर कार्यरत है। मुक्ता की भाभी ज्यादा पढ़–लिखी नहीं है परन्तु गृहस्थी का संचालन उचित तरीके से करती है। मुक्ता के पिताजी का देहान्त हो चुका है। मुक्ता बी.ए. की पढ़ाई कर रही है। उसकी माताजी पूजा–पाठ में विश्वास रखती है। अपना अधिकतर समय वह घर व मन्दिर में व्यतीत करती है।

च. मानसिक अन्तर्द्वन्द्व को सहन करती नारी :

उपन्यास में मुक्ता को अनेक अन्तर्द्वन्द्व से लड़ते हुए बताया है। वह कभी प्रेमी के साथ, कभी पढ़ाई को लेकर और कभी अपने ही भाग्य को कोसती नजर आती है। नारी जीवन प्रायः द्वन्द्वों के बीच ही चलता रहता है। मुक्ता अपने द्वन्द्व को अपनी सखी के समक्ष इस प्रकार प्रकट करती है–

''भाग्य का दोष नहीं वीणा, यही तो दुःख है। भाग्य तो मेरे द्वार चलकर आया था। मैंने ही अपने पाँवों पर कुल्हाड़ी कार ली। जिसके पैरों की धूल भी नहीं मैं, उसे ठुकरा कर चली आई। वीणा अब सदा–सदा इस आग में जलूँगी। इस यातना से कहाँ मुक्ति मिलेगी ?''[8]

द्वन्द्व कैसा भी हो, नारी को सदा अकेले ही उसे अपने हृदय में दबाकर रखना पड़ता है। अपनी विकलता, जलन को सदा सहन करने के लिए वह बाध्य है। मुक्ता भी अपने प्रेम को त्यागने के पश्चात अपने इसी द्वन्द्व को आजीवन सहन करने को बाध्य है।

गौण पात्र :

(1) ईजा

ईजा का अर्थ है– माँ। पहाडी क्षेत्र में माँ को ईजा कहते है। उपन्यास में ईजा का आगमन बोज्यू के घर पर होता है। वहीं पर मुक्ता को ईजा का आशीष प्राप्त होता है। ईजा चन्द्रमोहन से अत्यधिक प्रेम करती है।

(2) लता

लता मुक्ता की भाभी है। वह कम पढ़ी–लिखी है। उपन्यास में इस प्रकार उसका स्वरूप स्पष्ट हुआ है–

''छोटे कद की खूब गोल–मटोल। दीपू के होने के बाद तो और भी मोटी होती जा रही है। वैसे सुन्दी है– गौर वर्ण, नुकीली नाक, पतले गुलाबी होंठ, जरा छोटी बादाम आँखे। कुल मिलाकर पूरी सेठानी लगती है।''[9]

लता का व्यवहार उपन्यास में मिलनसार है। साथ ही वह जिद्दी स्वभाव की है।

(3) मुक्ता की माँ

पिताजी की मृत्यु के उपरान्त मुक्ता की माँ परिवार में अपना ज्यादा समय व्यतीत करती है। मुक्ता, नरेन, दीपू, लता सभी का ध्यान रखती है। मुक्ता की बिदाई के समय उसके पास साहस नहीं होता है कि उसे विदा कर सके। वह अपनी पुत्री को पढ़ाने के लिए तत्पर रहती है साथ ही उसके विवाह की चिन्ता भी उसे बनी रहती है।

(4) अनन्दा

मुक्ता की बड़ी बहन है जिसका विवाह हो चुका है। मुक्ता कुछ दिनों के लिए अपनी बड़ी बहन के यहाँ जाती है जहाँ पर उसे अनन्दा का अत्यधिक प्रेम प्राप्त होता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 7, April 2023

(5) वासन्ती

बोज्यू की छोटी बहन है जिसका विवाह होने जा रहा है। बोज्यू उसे सोने का पैण्डल देने वाली है।

(6) बुआ

मुक्ता के पिताजी की एक बहन है। वह मुक्ता के लिए रजत का रिश्ता लेकर आती है।

(7) वीणा

वीणा मुक्ता की अतरंगी सखी है। वह उससे अत्यधिक स्नेह रखती है। वीणा और मुक्ता एक दूसरे के बिना एक पल भी नहीं रह पाती हैं। मुक्ता वीणा से अपने हृदय की सारी बातें बता देती है।

(8) लक्ष्य

लक्ष्य वीणा और मुक्ता की सहेली है। वह शेखर से प्रेम करती है। शेखर से प्रेम का पता उसके परिवार वालों को चल जाता है और उसका घर से निकलना बन्द हो जाता है। लक्ष्य का विवाह उसी के समाज में एक परिवार में निश्चित कर दिया जाता है।

(9) प्रभा

मुक्ता को लक्ष्य के बारे में जानकारी देने जाती है। प्रभा भी वीणा की सहेली है। वही उसे बताती है कि आजकल लक्ष्य शेखर के साथ प्रेम–वार्तालाप कर रही है।

'बोज्यू' उपन्यास के पुरूष पात्र :

बोज्यू उपन्यास के पुरूष पात्रों में मुख्य पात्र चन्द्रमोहन है। अन्य सहायक पात्र या गौण पात्रों में शेखर, जोशीजी, बोज्यू के पिताजी, रजत आदि हैं जो कथा को आगे बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योगदान देते है। चन्द्रमोहन युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, साथ ही उसमें युवा नायक के समस्तत गुण भी हैं। चन्द्रमोहन के व्यक्तित्व का उद्घाटन निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर होता है–

(1) आकर्षक व्यक्तित्व
(2) शिक्षित युवा
(3) वाक्पटु
(4) मुक्ता के प्रति पूर्ण समर्पित
(5) विफल प्रेमी

(1) आकर्षक व्यक्तित्व :

चन्द्रमोहन उपन्यास में मुक्ता का प्रेमी, बोज्यू का भाई, ईजा–पिताजी का प्रिय पुत्र आदि विविध स्वरूपों में हम सभी के समक्ष आता है। लेखिका ने चन्द्रमोहन के स्वरूप का उद्घोष निम्नलिखित शब्दों में इस प्रकार व्यक्त किया है–

''गौर वर्ण, घुँघराले बाल, जो शायद अभी सँवारे नहीं गए थे और माथे पर रह–रहकर बिखर रहे थे। धनुषाकार भँवों के नीचे, कुछ हरी, कुछ बादामी झलक लिए आँखें, एक सीधी लम्बी नाक और लड़कियों से सुकुमार होंठ, नुकीली ठोड़ी।''[10]

प्रस्तुत अंश चन्द्रमोहन के स्वरूप का निर्धारण करता है। साथ ही यह भी स्पष्ट होता है कि वह अत्यधिक सुन्दर और आकर्षक व्यक्तित्व का धनी है।

(2) शिक्षित युवा :

चन्द्रमोहन उपन्यास में शिक्षित युवा के रूप में उभरकर आता है। वह अपने अध्ययन में हमेंशा प्रथम आता है। बी.ए., एम.ए. की परीक्षा भी वह अच्छे अंकों से उत्तीर्ण करता है। चन्द्रमोहन उच्च रिसर्च के लिए अमेरिका जाता है। इसको लेखिका ने इस प्रकार व्यक्त किया है–

''अखबार में चन्द्रमोहन का चित्र मानो उसे व्यंग्य से देख रहा है। श्री चन्द्रमोहन पाण्डे भारत सरकार की ओर से छात्रवृत्ति पर भौतिक विज्ञान में उच्च रिसर्च के लिए अमरिका जाते हुए, सान्ताक्रुज हवाई अड्डे पर ...।''[11]

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 7, April 2023

चन्द्रमोहन एक सामान्य परिवार से सम्बन्ध रखता है। वह शिक्षित युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व भी करता है। वह अपनी शिक्षा को पूर्ण करके उच्चा रिसर्च के लिए भी जाती है। अतः लेखिका ने उसे एक शिक्षित आदर्श युवक के रूप में स्थापित किया है।

(3) वाक्पटु :

चन्द्रमोहन शिक्षित युवा होने के साथ–साथ अपनी वाक्पटुता से सभी का मन मोह लेता है। वह बच्चों में बच्चा, बड़ों में बड़ा मथा सहपाठियों में सहपाठी के रूप में अपनी छवि स्पष्ट करता है। जब बोज्यू पहाड़ी परिवेश का वर्णन करती है जो मुक्ता बोज्यू से पूछती है कि जब बर्फ गिरती है तब कैसा लगता है ? तब चन्द्रमोहन वाक्पटुता से जवाब देता हुआ तपाक से बोला–

''बिल्कुल धुनिए की रूई जैसा।''[12]

(4) मुक्ता के प्रति पूर्ण समर्पित :

उपन्यास का सम्पूर्ण कथानक मुक्ता और चन्द्रमोहन की प्रेम–गाथा को प्रकट करता प्रत्येक पाठक के मन को प्रसन्नता प्रदान करता है। चन्द्रमोहन का प्रेम मुक्ता के प्रति पमर्ण समर्पण भाव को व्यक्त करता है। चन्द्रमोहन दीपावली की रात अपने प्रेम का इजहार करता है। उस दृश्य को लेखिका ने इस प्रकार अपने उपन्यास में उकेरा है–

''बस तुम्हारी कृपा बनी रहे। मुक्ता लजाई–खी खड़ी रही, नई दुल्हन की तरह। दिल धड़क रहा था, मानो टूटे हुए रिकार्ड पर ग्रामोफोन की सुई अटक गई हो। एक हाथ कमर में डालकर चन्द्रमोहन ने उसक अपने पास खींच लिया और कागज की गुड़िया–सी मुक्ता खिंचती चली गई।''

चन्द्रमोहन स्वस्थ होते हुए बोला, ''सदा मेरी रहना, मुक्ता ! अन्यथा मैं जी नहीं सकूँगा।''[13]

यह अंश की अन्तिम पंक्ति में चन्द्रमोहन का सम्पूर्ण समर्पण मुक्ता के प्रति स्पष्ट हो जाता है।

(5) विफल प्रेमी :

हर प्रेम कहानी का अन्त दुःखान्त होता है। प्रेम हमेशा त्याग और बलिदान माँगता है। यहाँ पर पूर्ण रूप से मुक्ता के प्रति समर्पण होते हुए भी अन्त में चन्द्रमोहन को विफलता का सामना करना पड़ता है। विफलता के साकार रूप को लेखिका ने उपन्यास के अन्तिम परिच्छेद में इस प्रकार अंकित किया है–

'' सामने चन्द्रमोहन खड़ा है। कैसी–कैसी दृष्टि से वह मुक्ता को देख रहा है। बोला– ''डरो नहीं मुक्ता ! परेशान करने नहीं आया हूँ। अभी चला जाऊँगा। सोचा, बधाई दे आऊँ। बहुत मुबारक हो अपना वैवाहिक जीवन।''

''मुक्ता एकटक देखती रही। एकाएक वह हँस पड़ी। चन्द्रमोहन ने देखा तो रो पड़ा। मुक्ता की हँसी जैसे आरम्भ हुई थी, वैसे ही समाप्त हो गई। चन्द्रमोहन को वह ऐसे देख रही थी जैसे उसकी एक–एक रेखा को हृदय पर अंकित कर रही हो। अपनी लम्बी ऊँगलियों से आँखों की नमी पोंछता चन्द्रमोहन बिना बोले वहाँ से चला गया।''

चन्द्रमोहन की खामोशी ही मुक्ता के हृदय को दहलाने वाली थी। चन्द्रमोहन प्रेम को करता हुआ भी अपने प्रेम को पाने में असफल रहा।

जिन परिस्थितियों में त्याग और बलिदान की बात आती है, तब नारी ही बलिदान करती है। पुरूष चाहकर भी अपनी विफलता को स्वीकार नहीं करता है। यहाँ चन्द्रमोहन का शान्त भाव से चले जाना उसके प्यार की विफलता को प्रकट करता है। साथ ही उसके त्याग और विफलता को भी उद्घाटित करता है।

गौण और सहायक पात्र :

(1) शेखर :

शेखर वीणा से अत्यधिक प्रेम करता है पर वीणा को वह एक आँ भी नहीं सुहाता। उपन्यास में शेखर को एक सड़क छाप आशिक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रारम्भ में वह वीणा के साथ और फिर उसकी सखी लक्ष्स के साथ इश्कबाजी करता नजर आता है।

(2) रजत :

रजत प्रस्तुत उपन्यास में मुक्ता के भावी पति के रूप में उभरकर आता है। वह इंजीनीसर है। उसके हँसमुख होने से वह सभी का मन मोह लेता है। मुक्ता की माताजी उसे टीका करके नारियल और अँगूठी देती है। रिश्ता मंजूर हो जाता है। मुक्ता विवाह उपरान्त रजत के साथ जीवन–निर्वाह करती है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 7, April 2023

(3) नरेन :

नरेन मुक्त का भाई है। वह कथा को आगे बढ़ाने वाला सहायक पात्र है। एस पर घर की सम्पूर्ण जवाअदारी है। वह एक पति, पिता, पुत्र की भूमिका निभाता नजर आता है। जब वह अपनी बहन के विवाह सम्बन्ध पर उससे बात करता है, तब वह भावपूर्ण पिता के रूप में अपनी प्रभावशाली व्यक्तित्व को उद्घाटित करता है।

(4) जोशीजी :

उपन्यास में बोज्यू के पति के रूप में नजर आते है। दिल्ली में मुक्ता के यहाँ किरायेदार के रूप में स्थानीय निवास करते है। दिल्ली में विदेश मंत्रालय में काम करते हैं। वह राहुल और अनुजा के पिताजी है। जोशीजी का व्यक्तित्व रौबदार है। मुक्ता की उनसे बोलचाल कम है। वे जातिवाद को बहुत ज्यादा मान्यता देते हैं।

(5) बोज्यू के पिताजी :

बोज्यू के पिताजी का व्यक्तित्व उपन्यास में बहुत ही साधारण बताया गया है। उसका स्वभाव बहुत ही धार्मिक और कोमल है, परन्तु जब क्रोध आता है तो वे बहुत ज्यादा क्रोधित होते है।

'बोज्यू' उपन्यास के बाल पात्र :

उपन्यास की पात्र योजना में जहाँ–जहाँ आधिकारिक पात्रों का गौण पात्रों का महत्त्व होता है। लेखिका पे अपने उपन्यास में बाल पात्रों का चरित्र–चित्रण भी किया है। ये सभी बाल–पात्र कथा को आगे बढ़ाने में सहायता करते है।

(1) रेणु :

उपन्यास में रेणु मुक्ता की छोटी बहन है। रेणु, मन्ना और मुक्ता के आगमन से उपन्यास का आरम्भ होता है। मुक्ता के विवाह तक बाल पात्रों का योगदान रहता है।

(2) मुन्ना :

मुन्ना मुक्ता का छोटा भाई है। मुन्ना दशहरे की छुट्टियों में माँ दुर्गा की पूजा करने में शामिल होने के लिए लालायित रहता है।

(3) अनुजा :

अनुजा बोज्यू की लड़की है, वह बड़ी गम्भीर प्रकृति की हैं।

(4) राहुल :

राहुल बोज्यू का लड़का है। वह मुक्ता को काफी पसन्द करता है। छोटे–छोटे हाथ फैलाकर वह मुक्ता से लिपट जाता है। यह राहुल मुक्ता के स्नेह का पात्र हैं।

(4) बब्बल :

मुक्ता का सबसे प्रिय भतीजा है जिसे वह अत्यधिक प्रेम करती है। यह बोज्यू का सबसे छोटा लड़का है जिसे दीपावली के पूर्व वह लेकर आती हैं।

(5) दीपू :

नरेन–लता जो कि मुक्ता के भाई–भाभी हैं, उनका पुत्र है। वह अतिशय शरारती है, स्वभाप से जिद्दी है। खाने–पीने में आनाकानी करता है जिसके कारण लता उसे दो–चार चाँटे रसीद कर देती हैं।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि – डॉ. सुनीता जैन द्वारा रचित लघु उपन्यास 'बोज्यू' लघु उपन्यासों के सभी तत्त्वों का अनुसरण करता है। उघु उपन्यास में पात्र और चरित्र–योजना का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। लघु उपन्यासों में बृहत् उपन्यासों की तरह पात्रों की भरमार नहीं होती। लघु उपन्यास में दो या तीन पात्रों के मध्य ही सम्पूर्ण कथानक घटित हो जाता है। बोज्यू की पात्र योजना को तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया है–

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 7, April 2023

(1) नारी पात्र
(2) पुरूष पात्र और
(3) बाल पात्र

सभी पात्रों का उपन्यास में विशेष महत्त्व है। लेखिका ने युवा मन को मुक्ता–चन्द्रमोहन के माध्यम से व्यक्त किया है। नारी के सोच–विचार को उपन्यास के केन्द्रबिन्दु के माध्यम से व्यक्त किया है। यहीं पर भ्रातृत्व–प्रेम को नरेन के माध्यम से व्यक्त किया है। पिता के प्रेम को चन्द्रमोहन के पिता के माध्यम से व्यक्त किया गया है। ममतामयी माँ के रूप में चन्द्रमोहन और मुक्ता की माँ के माध्यम से व्यक्त किया है। सखी–प्रेम को वीणा–मुक्ता से व्यक्त किया है।

बाल पात्रों के माध्यम से लेखिका ने कथा को साकार रूप प्रदान किया है। लघु उपन्यास के अर्थ व स्वरूप को उद्घाटित करते हुए लघु उपन्यास के तत्त्वों को उद्घाटित किया गया है।

बोज्यू उपन्यास और पात्र–योजना का सम्पूर्ण परिचय दिया गया है। उपन्यास में प्रत्येक पात्र का अपना विशिष्ट स्थान है। पात्रों की छवि ने (मुक्ता, चन्द्रमोहन और बोज्यू) पाठक के हृदय पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। बोज्यू उपन्यास का प्रत्येक पात्र चाहे वह मुख्य पात्र हो, सहयोगी पात्र हो या बाल पात्र हो, पाठकों को अपनी ओर सहज रूप में आकर्षित किया है।

लेखिका ने अपने लघु उपन्यास में वर्तमान समय में उपस्थित मानव–मन के परिवेशगत मनोभावों की अभिव्यक्ति, नारी–मन के अन्तर्द्वन्द्व, मनोविश्लेषण को अपने शब्दों के माध्यम से सार्थक रूप प्रदान किया है। उपन्यास के पात्र महज पात्र न होकर साकार रूप व आकार ग्रहण करते हैं जिनमें पाठक अपनी ही प्रतिछवि देखने लगता है।

संदर्भ स्रोतः

[1]. डॉ. सुनीता जैनः सुनीता जैन अब तक – । (उपन्यास), पृ. 83
[2]. डॉ. सुनीता जैन : पूर्वोक्त, पृ. 61
[3]. डॉ. सुनीता जैन : पूर्वोक्त, पृ. 61
[4]. डॉ. सुनीता जैन : पूर्वोक्त, पृ. 73
[5]. डॉ. सुनीता जैन : पूर्वोक्त, पृ. 62
[6]. डॉ. सुनीता जैन : पूर्वोक्त, पृ. 51
[7]. डॉ. सुनीता जैन : पूर्वोक्त, पृ. 83
[8]. डॉ. सुनीता जैन : पूर्वोक्त, पृ. 82
[9]. डॉ. सुनीता जैन : पूर्वोक्त, पृ. 32
[10]. डॉ. सुनीता जैन : पूर्वोक्त, पृ. 38
[11]. डॉ. सुनीता जैन : पूर्वोक्त, पृ. 83
[12]. डॉ. सुनीता जैन : पूर्वोक्त, पृ. 40
[13]. डॉ. सुनीता जैन : पूर्वोक्त, पृ. 72